International Journal of Arts & Education Research

गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर

अमित कुमार शर्मा*[1], डा0 प्रदीप सिंह दहल[2]

[1]शोध छात्र, सी0एम0जे0 वि0वि0, शिलॉग।

[2]इकडोल, शिक्षा विभाग, एच0 पी0 यू0, शिमला।

सार

उपनिषदों में विवेचित विश्व बोध की भावना को रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने आत्मसात किया। उन्हें सम्पूर्ण जीवजगत में एक ही दिखाई देती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने कहा है! मानवता को पहले अधिक विकसित भावुकतापूर्ण एवं शक्तिशाली एकता की अनुभूति करना है। उन्हें इस विश्व बाह्य विविधताओं के बीच एकता नजर आती है। और वे इस विश्व के अन्तराल में इनकार एक आध्यात्मिक यर्थाथ की अनुभूति करते हैं। अन्नत का ज्ञान और उनकी शक्ति आकाश के तारों की अपेक्षा मनुश्य की आत्मा में अधिक उपलब्ध होती है। ''धरती के मानव मात्र ईश्वरीय सितार के स्वर्णतार के समान है'' रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने मानव करूणा के प्रति मुझमें एक विशेष प्रकार संवेदनशीलता थी। टैगोर का मानवतावादी दर्शन उनके समस्त शैक्षिक चिन्तन में दिखाई देता है। टैगोर जी की विचारधारा में आदर्शवाद की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। कि प्रत्येक छात्र को प्रकृति के द्वारा बहुत सारी शक्ति मिली हुई है। जीवन की आवश्यकताओं की पूति के लिए इस शक्ति का बहुत थोड़ा सा अंश ही प्रयोग में लाया जाता है। शिक्षा का काम केवल जीवनयापन दक्षता प्रदान करना नहीं है। बल्कि बालक में निहित सृजनात्मक तत्व का विकास करना है। किसी न किसी व्यक्ति का जन्म किसी न किसी उचित लक्षण की प्राप्ति के लिए होता है। वह अपनी लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसार हो सके। इसके लिए शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। ''जीवन का लक्ष्य आत्मकेन्द्रित स्वार्थ में नही है। अपितू अपने आप को लुटा देने में है। दीपक यदि अपने तेल को संचित रखना चाहे तब उसक जीवन का लक्ष्य पूरा नहीं होगा वह स्वयं भी अंधकार में रहेगा और लोगो को भी रखेगा अतः उसके जीवन का लक्ष्य तो स्वयं प्रकाशित होने तथा दूसरों को प्रकाशित करने में है।''

IJAER